International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

इस्मत चुगताई की कहानी 'लिहाफ़' में समलैंगिकता की वर्णनात्मक अभिव्यक्ति

Anvesha Singh Rathore[1], Jayalakshmi K[2]

[1]Research Scholar, Department of Languages, School of Social Sciences and Languages, Vellore Institute of Technology, Vellore, India
[2]Associate Professor, Department of Languages, School of Social Sciences and Languages, Vellore Institute of Technology, Vellore, India

Abstract
उर्दू साहित्य का एक महत्वपूर्ण काम, इस्मत चुगताई द्वारा लिखित "लिहाफ़" 1942 में प्रकाशित हुआ था। "लिहाफ" सामाजिक रूप से निषिद्ध रिश्तों की जटिलताओं को दर्शाते हुए, समलैंगिकता को चतुराई से चित्रित करता है। चुगताई के लेखन में समाज का वास्तविक चित्रण प्रदर्शित होता है, जो अक्सर भारतीय समाज में व्यापक पितृसत्तात्मक व्यवस्था और रूढ़िवादी मानसिकता की आलोचना करता है। लिहाफ़ घरेलू मुस्लिम परिवार के भीतर समलैंगिकता और मानवीय रिश्तों की समझ के विषय पर प्रकाश डालता है। स्वतंत्रता-पूर्व युग के दौरान भारत में समलैंगिक संबंधों का प्रतिनिधित्व सीमित था। उन्होंने पारंपरिक संस्कृति के ख़िलाफ़ लिखा, जो स्पष्ट रूप से लिहाफ़ में लैंगिकता के बारे में बताती है। इस्मत पर उनकी कहानी 'लिहाफ़' के लिए अश्लीलता का आरोप लगाया गया था। यौन क्रिया में संलग्न दो महिलाओं के अभद्र चित्रण के लिए इस्मत चुगताई पर सवाल भी उठाया गया। इस्मत चुगताई की साहित्यिक कृतियाँ अक्सर लिंग पूर्वाग्रह, सामाजिक आर्थिक असमानता और उनके युग के दौरान प्रचलित दमनकारी सामाजिक सम्मेलनों जैसे विषयों पर प्रकाश डालती हैं। उनकी कहानियाँ, जैसे "लिहाफ़", हाशिए पर रहने वाले लोगों, विशेषकर महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले मुद्दों को प्रदर्शित करने की उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

Keywords: समलैंगिकता, लैंगिकता, पितृसत्तात्मक मानदंड, एलजीबीटीक्यू+

1. परिचय

"कहां है भारत की वह महान नारी, वह पवित्रता की देवी सीता, जिसके कमल जैसे नाजुक पैरों ने आग के शोलों को ठंडा कर दिया और मीराबाई जिसने बढ़ कर भगवान के गले में बाहें डाल दीं। वह सावित्री जिसने यमदूत से अपने सत्यवान की जीवन-ज्योत छीन ली। रजिया सुल्ताना जिसने बड़े-बड़े शहंशाहों को ठुकरा कर एक हब्शी गुलाम को अपने मन-मंदिर का देवता बनाया। वह आज लिहाफ में दुबकी पड़ी है या फोर्स रोड पर धूल और खून की होली खेल रही थी।"[1] यह वक्तव्य है लेखिका इस्मत चुगताई उर्फ 'उर्दू अफसाने की फर्स्ट लेडी' का। महिला लैंगिता, लिंग मानदंडों और सामाजिक चिंताओं के बारे में निडरता से लिखकर, इस्मत चुगताई (1915-1991) भारत के नारीवादी आंदोलन में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थीं। इस्मत चुगताई की साहित्यिक शैली और नारीवादी दृष्टिकोण कई अलग-अलग लोगों और समूहों से काफी प्रभावित थे जो उनके लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में काम करते थे। इस्मत चुगताई की साहित्यिक आवाज़ और विषय चयन को प्रगतिशील लेखक आंदोलन (पीडब्लूएम) ने काफी हद तक

आकार दिया, जिसका उनके लेखन के इन पहलुओं पर काफी प्रभाव पड़ा। इस्मत चुगताई की साहित्यिक कृतियाँ अक्सर लिंग पूर्वाग्रह, सामाजिक आर्थिक असमानता और उनके युग के दौरान प्रचलित दमनकारी सामाजिक सम्मेलनों जैसे विषयों पर प्रकाश डालती हैं।

20वीं सदी की प्रख्यात उर्दू लेखिका इस्मत चुगताई का जन्म 21 अगस्त, 1915 को भारत के उत्तर प्रदेश के बदायूँ में हुआ था। उनके विचार और साहित्यिक आवाज़ एक बड़े, प्रगतिशील और शिक्षित मुस्लिम परिवार में उनके पालन-पोषण से काफी प्रभावित थे। इस्मत ने आगे की शिक्षा प्राप्त करके प्रचलित सामाजिक परंपराओं को चुनौती दी, जब मुस्लिम महिलाओं के लिए इस तरह के कार्यों में संलग्न होना असामान्य था। उनका रचनात्मक कार्य भारत के प्रगतिशील लेखक आंदोलन से प्रेरित था, जिसने तर्क दिया कि साहित्य को सामाजिक चिंताओं का सामना करना चाहिए और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना चाहिए। चुगताई के कुछ उल्लेखनीय कार्यों में "तेहरी लकीर", "अजीब आदमी, और "एक शोहर की खातिर" शामिल हैं। उर्दू साहित्य में उनके योगदान के लिए उन्हें कई पुरस्कार और प्रशंसाएं मिलीं, जिनमें (1976) में पद्म श्री और साहित्य अकादमी पुरस्कार (1975) शामिल हैं।

उन्होंने पारंपरिक लैंगिक रूढ़िवादिता पर सवाल उठाया और महिलाओं की जरूरतों, कुंठाओं और आकांक्षाओं पर प्रकाश डाला। उनके पात्र अक्सर जटिल होते हैं, विनम्र रूढ़िवादिता को चुनौती देते हैं और स्वायत्तता और आत्म-अभिव्यक्ति के लिए प्रयास करते हैं। इस्मत चुगताई और सआदत हसन मंटो प्रगतिशील लेखक आंदोलन के समकालीन और प्रमुख व्यक्ति थे। चुग़ताई और मंटो के बीच घनिष्ठ व्यक्तिगत और व्यावसायिक संबंध थे। मंटो और चुगताई दोनों को अपने कार्यों के कारण काफी विरोध का सामना करना पड़ा, जो पारंपरिक सामाजिक मानकों को चुनौती देते थे और संवेदनशील विषयों को संबोधित करते थे। इस्मत चुगताई की यथार्थवाद कहानी कहने की शैली, उत्पीड़ित व्यक्तियों पर जोर, और वर्जित मुद्दों की साहसी जांच ये सभी तरीके हैं जिनसे मंटो ने उनके काम को प्रभावित किया है। व्यक्तिगत अनुभवों, प्रगतिशील साहित्यिक प्रेरणाओं और परिवार के सदस्यों के प्रोत्साहन के संयोजन ने इस्मत चुगताई को लैंगिक असमानता और सामाजिक अन्याय के बारे में लिखने के लिए प्रेरित किया।

"लिहाफ़" पर बहस ने महिलाओं की कामुकता और कभी-कभी दमित विषयों पर निष्पक्ष चर्चा की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाई। 1942 में प्रकाशित, इस्मत चुगताई की "लिहाफ़" ने महिला यौनिकता और समलैंगिक संबंधों के चित्रण के कारण अश्लीलता का मुकदमा चलाया। अंततः अदालत ने अश्लीलता के आरोपों को ख़ारिज करते हुए कहानी की साहित्यिक खूबियों का हवाला देते हुए उन्हें बरी कर दिया। अपनी किताब *'अ लाइफ़ इन वर्ड्स – मेमोयर्स'* में इस्मत चुगतई लिखती हैं कि किस तरह एक लघु कथा ने उनके जीवन को पूरी तरह से बदल दिया था। वे लिखती हैं, *"मुझ पर आज भी लिहाफ़ की लेखिका होने का लेबल लगा हुआ है।"*[3] *"इस कहानी को लिखने के बाद तो मानो लोगों के हाथ मुझे हर समय शर्मिंदा करने का कोई बहाना लग गया था और इसके बाद मैंने जो कुछ भी लिखा वह इसी बदनामी के बोझ तले दबता चला गया।"*[3]

2. मुख्य भाग-

"लिहाफ़" एक युवा लड़की के दृष्टिकोण से बताई गई है जिसे उसके रिश्तेदार बेगम जान के साथ रहने के लिए भेजा गया था। बेगम जान के साथ रहने वाली एक छोटी लड़की की आँखों से देखा गया है, यह कथा भारत में मुस्लिम संस्कृति के परंपरावादी संदर्भ में घटित होती है। बेगम जान और उनकी सेविका रब्बो उनके कक्ष में एक बिस्तर साझा करती हैं, और वह बच्ची रात में अपने कमरे में होने वाली असामान्य चीजों को देखती है। "लिहाफ़" उनके बंधन की अनकही और छिपी प्रकृति का एक रूपक है। रात में रजाई का हिलना दो महिलाओं के बीच

निकटता का संकेत देता है, लेकिन बच्चे के अनुभव की कमी किसी भी प्रत्यक्ष व्याख्या को असंभव बना देती है। ऐसे माहौल में जहां खुले तौर पर समलैंगिकता पर चर्चा करना अस्वीकार्य था, यह बारीकियां महत्वपूर्ण हैं।

बेगम जान और रब्बो के बीच की गतिशीलता शक्ति और निर्भरता के विषयों को भी छूती है। बेगम जान, मालकिन होने के नाते, रब्बो पर एक निश्चित शक्ति रखती है। हालाँकि, रब्बो की भूमिका एक सेविका से भी बढ़कर है; वह एक विश्वासपात्र बन जाती है, जिससे एक जटिल अन्योन्याश्रयता पैदा होती है। इस साझेदारी द्वारा पितृसत्तात्मक ढांचे के भीतर समान-लिंग संबंधों का एक जटिल चित्रण पेश किया गया है, जो स्थापित शक्ति संरचनाओं पर सवाल उठाता है। "लिहाफ़" के प्रकाशित होने पर काफी विवाद हुआ, जिसके परिणामस्वरूप अश्लीलता के आधार पर अदालत में सुनवाई हुई। चुगताई का समलैंगिकता का चित्रण अभूतपूर्व था, क्योंकि यह एक ऐसे विषय पर प्रकाश डालता था जो दक्षिण एशियाई साहित्य और समाज में ज्यादातर अनदेखा और कलंकित था।

इस्मत चुगताई की "लिहाफ़" में पितृसत्तात्मक व्यवस्था को पात्रों, सामाजिक संदर्भ और महिलाओं पर उत्पीड़न और शक्ति के व्यापक विषयों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। उसकी भावनात्मक जरूरतों के प्रति नवाब की उपेक्षा पितृसत्तात्मक समाज के विवाह के परिप्रेक्ष्य से उत्पन्न होती है, जो एक सामाजिक दायित्व से अधिक कुछ नहीं है। इसे हम कहानी की इन पंक्तियों में देख सकते हैं, *"मगर बेगम जान से शादी करके तो वे उन्हें कुल साज़ो-सामान के साथ ही घर में रखकर भूल गए।"*[2] पितृसत्तात्मक संरचना के कारण बेगम विद्रोह करने में असमर्थ है और चुपचाप अपने भाग्य को स्वीकार कर लेती है।

कथा को नारीवादी दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है। चुगताई उन पितृसत्तात्मक मानदंडों का विरोध करती हैं जो महिलाओं की लैंगिता और जीवन को प्रतिबंधित करते हैं। चुगताई ने बेगम जान की आकांक्षाओं को व्यक्त करके उन सामाजिक अपेक्षाओं को चुनौती दी है कि महिलाओं को विषमलैंगिक मानदंडों और वैवाहिक जिम्मेदारियों का पालन करना चाहिए। रब्बो के साथ बेगम जान के रिश्ते को उसकी शादी में सहन किए गए भावनात्मक परित्याग और उपेक्षा की प्रतिक्रिया के रूप में दर्शाया गया है। उसके पति की अरुचि उसे अपनी सेविका 'रब्बो' का साथ और स्नेह पाने के लिए प्रेरित करती है। इस्मत ने कहानी की शुरुआत में ही बेगम जान को महसूस हुए अकेलेपन का जिक्र किया है, *"बेगम जान से निकाह करने के बाद नवाब साहब ने उन्हें अपने घर में दूसरी चीज़ों की तरह ही एक कोने में कर दिया और जल्दी ही उन्हें पूरी तरह से भूल गए। यह नाज़ुक सी, खूबसूरत बेगम अकेलेपन में दुखी रहते हुए जीवन बिताने लगी।"*[2]

'लिहाफ़' को उनके यौन संबंधों के रूपक के रूप में उपयोग करते हुए, कहानी अप्रत्यक्ष रूप से दिखाती है कि बेगम जान और रब्बो शारीरिक और भावनात्मक रूप से एक-दूसरे के कितने करीब हैं। लिहाफ दर्शाता है कि कैसे उनका रिश्ता काफी गुप्त रखा गया है और समाज के मानदंडों के खिलाफ है। इस्मत ने लिहाफ़ और हाथी के रूपक के माध्यम से उल्लेख किया है, *"कमरे में घुप अंधेरा। और उस अंधेरे में बेगम जान का लिहाफ ऐसे हिल रहा था, जैसे उसमें हाथी बंद हो! 'बेगम जान!' मैंने डरी हुई आवाज निकाली। हाथी हिलना बंद हो गया। लिहाफ नीचे दब गया।"*[2]

3. समकालीन समाज में समलैंगिकता-

समकालीन समय में एलजीबीटीक्यू समुदाय की सामाजिक स्वीकृति बढ़ रही है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 6 सितंबर, 2018 को एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाया, जिसने भारतीय दंड संहिता की धारा 377 के कुछ प्रावधानों को अमान्य कर दिया, इसलिए सहमति से समलैंगिक संबंधों को अपराध की श्रेणी से हटा दिया गया। यह फैसला भारत में LGBTQ+ अधिकारों के लिए एक महत्वपूर्ण जीत थी। भारत में एक गतिशील LGBTQ+ सक्रियता वातावरण है, जो अधिकारों को आगे बढ़ाने और स्वीकृति को बढ़ावा देने के लिए समर्पित कई संगठनों और वकालत समूहों की

उपस्थिति की विशेषता है। भारत में, लोग एलजीबीटीक्यू+ अल्पसंख्यक समूहों के सदस्यों द्वारा सामना किए जाने वाले विशिष्ट संघर्षों को संबोधित करने के लिए काम कर रहे हैं। भारत में फिल्मों, टीवी कार्यक्रमों और इंटरनेट मनोरंजन में एलजीबीटीक्यू+ लोगों का कहीं अधिक अनुकूल और सूक्ष्म चित्रण किया गया है। प्रचार का यह स्तर सार्वजनिक दृष्टिकोण को बदलने और सहिष्णुता को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण है।

4. निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं, "लिहाफ" सामाजिक उदासीनता और दमन के संदर्भ में, सूक्ष्म लेकिन जीवंत तरीके से समलैंगिकता को चित्रित करता है। चुगताई द्वारा बेगम जान और रब्बो के रिश्ते का चित्रण पारंपरिक संस्कृति के भीतर यौनिकता और शक्ति के बीच जटिल संबंधों पर एक विचारोत्तेजक आलोचना है। समलैंगिकता और स्त्री यौनिकता को संबोधित करने के लिए चुगताई के साहसी दृष्टिकोण ने विभिन्न युगों में अन्य लेखकों और कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में काम किया है। चुगताई ने महिलाओं को अपनी आकांक्षाओं, चुनौतियों और क्षमताओं के साथ जटिल, विविध व्यक्तियों के रूप में चित्रित किया। निषिद्ध मुद्दों पर उनका साहसिक दृष्टिकोण अक्सर विवाद का कारण बनता था, जिसके परिणामस्वरूप पाठकों और आलोचकों की मिली-जुली प्रतिक्रिया होती थी। अब भी उनकी कहानी लिहाफ़ विश्वविद्यालयों में पढ़ी जाती है और साहित्य, लिंग अध्ययन और दक्षिण एशियाई अध्ययन में पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

इस्मत अपने काम के प्रति समर्पित थीं और यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ लिखती थीं। उस दौर को इस्मत ने अपने लफ्जों में यों बयां किया- *'उस दिन से मुझे अश्लील लेखिका का नाम दे दिया गया। 'लिहाफ' से पहले और 'लिहाफ' के बाद मैंने जो कुछ लिखा किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। मैं सेक्स पर लिखने वाली अश्लील लेखिका मान ली गई। ये तो अभी कुछ वर्षों से युवा पाठकों ने मुझे बताया कि मैंने अश्लील साहित्य नहीं, यथार्थ साहित्य दिया है।*[4]

5. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. https://hindi.feminisminindia.com/2016/10/27/ismat-chughtai-hindi/
2. इस्मत चुगताई की कहानी- लिहाफ़
3. इस्मत चुगतई की किताब - 'अ लाइफ़ इन वर्ड्स – मेमोयर्स'
4. इस्मत चुगताई की आत्मकथा - 'कागजी है पैराहन'
5. https://shorturl.at/SZFKW
6. https://www.apnimaati.com/2019/03/blog-post_71.html
7. https://www.tribunehindi.com/ismat-chughtai-who-used-to-write-obscene-stories/
8. https://www.specialcoveragenews.in/category/apni-baat/literature-womens-discussion-in-the-stories-and-novels-of-ismat-chughtai-1164405
9. https://www.tarshi.net/inplainspeak/hindi-review-lihaaf-short-story/
10. https://www.dnaindia.com/hindi/aapki-wall-se/analysis-feminism-literature-new-reading-famous-story-lihaf-ismat-chugtai-sudipti-4033647